विशिष्टाः सूक्तयः

क्र.सं.	सूक्तिः	हिन्दी अनुवाद	Meaning
1	क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे। (*भोजप्रबन्धः*-168)	कार्यसिद्धि सामर्थ्य से होती है, उपकरणों से नहीं।	Success comes from ability, not from tools.
2	आपदर्थे धनं रक्षेत्। (*महाभारतम्*, उद्योगपर्व-37.18)	विपत्ति के समय के लिए धन का संचय एवं संरक्षण करना चाहिए।	One should save wealth for times of adversity
3	उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः। (*पंचतन्त्रम्*-2.141)	कार्य केवल इच्छा या कल्पना करने से नहीं, बल्कि परिश्रम और पुरुषार्थ से ही सिद्ध होते हैं।	Tasks are accomplished not just by desire or imagination, but through hard work and effort.
4	नास्ति विद्यासमं चक्षुः। (*महाभारतम्*, शान्तिपर्व-175.35)	विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है।	There is no eye equal to knowledge.
5	सत्यमेव जयते नानृतम्। (*मुण्डकोपनिषद्*-3.1.6)	सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं।	Truth always wins, not falsehood.
6	न किञ्चिदपि तद्वस्तु यदभ्यासस्य दुष्करम्। (*बोधिचर्यावतारः*-6.14)	नियमित अभ्यास करने वाले के लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं होता।	Nothing is too difficult for one who practices regularly.

© NCERT not to be republished

7	असंशयं हि कालस्य पर्यायो दुरतिक्रमः। (*महाभारतम्*, सौप्तिकपर्व-8.51)	निस्संदेह, समय की गति का अतिक्रमण करना असंभव है।	Indeed, the course of time is impossible to overcome.
8	सङ्गच्छध्वं, संवदध्वम्। (*ऋग्वेदः*-10.191.2)	साथ चलो, साथ बोलो।	Move together, speak together.
9	शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। (*कुमारसम्भवम्*-5.33)	निःसन्देह शरीर ही धर्म के पालन का प्रथम और प्रमुख साधन है।	The body is indeed the primary means of performing righteous deeds.
10	शीलं परं भूषणम्। (*नीतिशतकम्*-83)	चरित्र ही सर्वश्रेष्ठ आभूषण है।	Character is the greatest ornament.
11	सहसा विदधीत न क्रियाम् अविवेकः परमापदां पदम्। (*किरातार्जुनीयम्*-2.3)	किसी भी कार्य को बिना सोचे-समझे नहीं करना चाहिए, क्योंकि बिना विचार के किया गया कार्य बड़ी-बड़ी विपत्तियों का कारण बनता है।	Never act impulsively. Thoughtless actions often lead to serious troubles and misfortunes.
12	यादृशं वपते बीजं तादृशं लभते फलम्। (*महाभारतम्*, अनुशासनिकपर्व)	जैसा बीज बोया जाता है, वैसा ही फल प्राप्त होता है।	As the seed one sows, so is the fruit one reaps.
13	साहसे श्रीः प्रतिवसति। (*मृच्छकटिकम्*-4 अङ्कः)	साहसी व्यक्ति को ही सफलता और समृद्धि प्राप्त होती है।	Courage attracts success.

© NCERT not to be republished

14	शुभेन कर्मम् सौख्यम्। (*महाभारतम्*, अनुशासनपर्व-6.18)	अच्छे कार्य करने से सुख और शांति मिलती है।	Good actions lead to happiness.
15	शनैर्विद्या शनैरर्थाः। (*बृहस्पतिनीतिसारः*)	विद्या धीरे-धीरे प्राप्त होती है और धन भी धीरे-धीरे अर्जित होता है।	Knowledge is acquired gradually, and wealth is accumulated gradually.
16	पण्डिताः समदर्शिनः। (*श्रीमद्भगवतगीता*-5.8)	विद्वान् सभी प्राणियों को समान दृष्टि से देखते हैं।	The wise men see all beings with equal vision.
17	रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय। (*मेघदूतम्*, पू.मे.-20)	खाली वस्तु हल्की होती है, जबकि पूर्णता ही गरिमा और सम्मान का कारण बनती है।	An empty thing is always light, whereas fullness gives it gravity and honour.
18	मौनं सर्वार्थसाधनम्। (*पञ्चतन्त्रम्*)	मौन सभी उद्देश्यों की सिद्धि का साधन है।	Silence is the means to accomplish all purposes.
19	उपायं चिन्तयेत् प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत्। (*पञ्चतन्त्रम्*)	बुद्धिमान व्यक्ति किसी कार्य के उपाय के साथ-साथ उससे होने वाली हानि पर भी विचार करता है।	A wise person should consider both the means to achieve a goal and the possible dangers or adverse consequences.
20	शठे शाठ्यं समाचरेत्। (*विदुरनीतिः*)	कपटी व्यक्ति के साथ उसके अनुरूप व्यवहार करना चाहिए।	Deal with a deceitful person in a manner appropriate to his deceit.

© NCERT not to be republished

21	कर्मण्येवाधिकारस्ते। (*श्रीमद्भगवतगीता*-2.47)	मनुष्य का अधिकार केवल अपने कर्तव्य का पालन करने में है, उसके फल पर नहीं।	You have the right only to action, not to its fruits.
22	परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्। (*पञ्चतन्त्रम्*-1.101)	परोपकार करना पुण्य का कारण है और दूसरों को कष्ट पहुँचाना पाप का कारण है।	Helping others leads to merit; causing suffering to others leads to sin
23	धर्मो रक्षति रक्षितः। (*मनुस्मृतिः*-8.10)	जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।	Dharma protects those who protect it.
24	दमो हि परमो लोके। (*महाभारतम्*, शान्तिपर्व-154.10)	आत्मसंयम संसार में सबसे श्रेष्ठ गुण है।	Self-control is the supreme excellence in human life.
25	विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्। (*प्रसङ्गाभरणम्*)	विद्या का धन सभी धनों में सर्वोत्तम है।	The wealth of knowledge is the greatest of all forms of wealth.
26	वसुधैव कुटुम्बकम्। (*हितोपदेशः*-1.70)	सम्पूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है।	The whole world is one family.
27	दुर्जनः परिहर्तव्यः। (*नीतिशतकम्*-53)	दुर्जन का त्याग करना चाहिए।	A wicked person should be avoided.
28	दयामूलो भवेद्धर्मः। (*अग्निपुराणम्*-5.24)	दया ही धर्म का आधार है।	Compassion is the foundation of Dharma.

© NCERT not to be republished

29	सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः। (*तैत्तिरीयोपनिषद्*-1.11.1)	सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो और स्वाध्याय में कभी प्रमाद (लापरवाही) मत करो।	Speak the truth, practise righteousness, and never neglect self-study.
30	बुद्धिर्यस्य बलं तस्य। (*पञ्चतन्त्रम्*-1.101)	जिसके पास बुद्धि है, वास्तविक बल उसी का है।	True strength belongs to the one who possesses wisdom.
31	तमसो मा ज्योतिर्गमय। (*बृहदारण्यकोपनिषद्*-1.3.28)	हे प्रभु! मुझे अज्ञानरूपी अन्धकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले चलिए।	Lead me from darkness to light.
32	दुर्लभं भारते जन्म। (*स्कन्दपुराणम्* मा. चौ.-12.54-55)	भारतभूमि में जन्म लेना महान सौभाग्य है।	To be born in the land of Bharata (India) is a great blessing.
33	सन्तोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत्। (*पञ्चतन्त्रम्*- 2.155)	सन्तोष के समान दूसरा कोई धन नहीं है।	There is no wealth equal to contentment.
34	मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव। (*तैतिरीयोपनिषद्*-1.11.1-2)	माता को देवतुल्य मानो, पिता को देवतुल्य मानो, आचार्य को देवतुल्य मानो।	Treat your mother as divine, treat your father as divine, and treat your teacher as divine.
35	धैर्यधना हि साधवः। (*कादम्बरी*)	सज्जनों का वास्तविक धन धैर्य होता है।	Patience is the true wealth of the noble.

© NCERT not to be republished

36	सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्। (*मनुस्मृतिः*-4.137)	सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए।	One should speak the truth and speak pleasantly.
37	क्रोधो प्राणहरः शत्रुः। (*रामायणम्*, उ. का.)	क्रोध प्राणों का नाश करने वाला शत्रु है।	Anger is an enemy that destroys life.
38	लोभः पापस्य कारणम्। (*भोजप्रबन्धः*)	लोभ पाप का कारण है।	Greed is the cause of sin.
39	विद्या ददाति विनयम्। (*हितोपदेशः*)	विद्या से विनय प्राप्त होता है।	Knowledge gives rise to humility.
40	तिलमात्रमप्युपकारं शैलमात्रं मन्यते साधुः। (*चाणक्यसूत्राणि*-378)	सज्जन व्यक्ति तिल के समान छोटे से उपकार को भी पर्वत के समान महान मानता है।	A noble person regards even the smallest act of kindness as great as a mountain.
41	प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति। (*नीतिशतकम्*-27)	श्रेष्ठ पुरुष जिस कार्य का आरम्भ करते हैं, उसे बीच में नहीं छोड़ते।	Noble people never abandon a task once they have begun it.
42	श्रद्धया साध्यते सर्वम्। (*नारदपुराण*, पूर्वभाग-1.4.1)	श्रद्धा से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।	Everything can be accomplished through faith
43	उपायं चिन्तयेत्प्राज्ञो ह्यपायमपि चिन्तयेत्। (*पञ्चतन्त्रम्*)	बुद्धिमान व्यक्ति को उपाय (समाधान) के साथ-साथ उसके संभावित अपाय (हानि या दुष्परिणाम) पर भी विचार करना चाहिए।	A wise person should consider not only the solution but also its possible risks and consequences.

© NCERT not to be republished

44	फलं भाग्यानुसारतः। (*महाभारतम्*)	फल भाग्य के अनुसार प्राप्त होता है।	The result comes according to one's destiny.
45	समाना हृदयानि वः। (*ऋग्वेदः*-10.161.4)	तुम सबके हृदय एक समान भावना और सद्भाव से युक्त हों।	May your hearts be filled with the same spirit and harmony.
46	परोपकाराय सतां विभूतयः। (*नीतिशास्त्रम्*-66)	सज्जनों की सम्पत्ति परोपकार के लिए होती है।	The wealth of the noble is meant for the welfare of others.
47	अजरामवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्। (*हितोपदेशः* प्रस्ताविका-3)	बुद्धिमान व्यक्ति को ऐसा समझकर विद्या और धन की प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए मानो वह कभी वृद्ध या मृत नहीं होगा।	A wise person should strive to acquire knowledge and wealth as though he would never grow old or die.
48	कालो हि दुरति क्रमः। (*चाणक्यनीतिः*-16)	काल का अतिक्रमण करना असम्भव है।	Time is indeed impossible to overcome.
49	जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः। (*चाणक्यनीतिः*)	जल की बूँद-बूँद गिरने से घड़ा धीरे-धीरे भर जाता है।	A pot is gradually filled by the falling of drops of water.
50	समानशीलव्यसनेषु सख्यम्। (*हितोपदेशः*)	समान स्वभाव और समान रुचि वाले लोगों के बीच ही सच्ची मित्रता होती है।	Friendship exists among those who share the same nature and interests.

© NCERT not to be republished

51	दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्। (*नीतिशतकम्*-53)	दुष्ट व्यक्ति, चाहे वह विद्या से सुशोभित (अत्यंत विद्वान) ही क्यों न हो, उसका भी त्याग करना चाहिए।	Even if a wicked person is highly learned and adorned with knowledge, they should still be avoided.
52	अद्यैव कुरु यच्छ्रेयः। (*महाभारतम्*)	जो कल्याणकारी (श्रेष्ठ) कार्य है, उसे आज ही करो।	Do today itself whatever is good and beneficial.
53	शक्तानां भूषणं क्षमा। (*महाभारतम्*, उद्योगपर्व-33.49)	श्रेष्ठ व्यक्तियों का आभूषण क्षमा है।	Forgiveness is the true ornament of virtuous people
54	प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः। (*चाणक्यनीतिः*-16.17)	मधुर वचन बोलने से सभी प्राणी प्रसन्न हो जाते हैं।	Everyone is pleased when spoken to with kind and pleasant words.
55	सर्वत्रार्जवं शोभते। (*मृच्छकटिकम्*-10.39)	हर स्थान पर सरलता और निष्कपटता शोभा देती है।	Honesty and sincerity are admired everywhere.
56	शौचे यत्नः सदा कार्यः। (*नारदपुराणम्*, पू.भा-प्र. पा- 27.8)	स्वच्छता बनाए रखने का सदैव प्रयास करना चाहिए।	One should always strive to maintain cleanliness.
57	श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्। (*श्रीमद्भगवद्गीता*-4.39)	श्रद्धावान व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है।	A faithful person gains knowledge
58	सुखस्य मूलं धर्मः। (*कौटिल्यार्थशास्त्रम्*)	सुख का मूल (आधार) धर्म है।	Righteousness is the root of happiness.

© NCERT not to be republished

59	युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षणः। (*शार्ङ्गधरपद्धतिः*-452)	बुद्धिमान व्यक्ति को युक्तिसंगत बात छोटे बालक से भी ग्रहण कर लेना चाहिए।	A wise person should accept a reasonable idea even from a child.
60	नास्ति कीर्तिसमं धनम्। (*बृहन्नारदीयपुराणम्*-21.32)	कीर्ति के समान कोई धन नहीं है।	There is no wealth equal to a good reputation.

© NCERT not to be republished